लाल साइकिल कहाँ खो गई?

प्रभात

जंगल में बारिश में भीगती हुई अमिया की लाल साइकिल खड़ी थी। दूर से वह किसी लाल झाड़ी की तरह दिखाई दे रही थी। जब बारिश रुक गई तो लाल साइकिल से पानी ऐसे टपक रहा था जैसे झाड़ियों से टपकता है। बूँदें, फिसलपट्टी खाती हुई गिर रही थीं।

एक चींटी पिछले टायर पर चढ़ रही थी। पूरी चढ़ाई चढ़ लेने के बाद, ढलान फिर से शुरू हो जाती। ढलान के बाद मैदान आना चाहिए! दुनिया में ऐसा ही होता है। मगर यहाँ तो फिर से चढ़ाई शुरू हो जाती। ऐसा बार-बार हुआ तो चींटी को शक हुआ, "इस वक्त वह जहाँ है वह दुनिया है या नहीं?" यह सोचकर चींटी डर से काँपने लगी। वैसे ही जैसे बादल से छिटकने के बाद बूँद काँपती है। उसने डर के मारे टायर से छलाँग लगा दी। वह एक बौनी घास की फुनगी पर आकर गिरी। बौनी घास को वह खूब पहचानती थी। "अब कुछ ठिकाने की जगह मिली।" सुनने वाला कोई नहीं था फिर भी चींटी के चींटी से भी छोटे मुँह से यह बात निकली।

साइकिल को लेने कोई नहीं आया। कुछ चिड़ियाँ वहाँ से गुजरीं। जैसे वे और झाड़ियों पर बैठीं, लाल साइकिल पर भी बैठीं और उड़ गईं। एक खरगोश उधर से गुज़रा। उसे इस नए लाल जानवर को देखकर बड़ी हैरानी हुई। वह आँखें चमकाता हुआ भाग गया।

तभी बहुत सारे जंगली चूहे वहाँ से गुज़रे। वे बहुत सारे थे इसलिए निडर थे। सबके-सब साइकिल पर चढ़कर उछल-कूद मचाने लगे। उनके साइकिल पर दौड़-भाग करने से किर्र-किर्र का मज़ेदार संगीत पैदा हो रहा था। उन्हें लग रहा था कि यह संगीत शायद उनके पंजों से निकल रहा है।

रात हो गई थी। साइकिल का लाल रंग अँधेरे में डूब गया। कुछ देर बाद आकाश में चाँद के खिलखिलाने की आवाज़ आई। साइकिल का लाल रंग फिर चमकने लगा। ओस झरने लगी। साइकिल ठिठुरने लगी। गहरी नींद में जंगल के साँस लेने की और हवा के अकेले घूमने-फिरने की आवाज़ आने लगी।

साइकिल को लेने कोई नहीं आया। चोर उसे जंगल में छोड़ गए थे। वह अभी भी वहीं खड़ी थी।

इधर मम्मी-पापा अमिया से सो जाने के लिए कह रहे थे। मगर वह उनसे नाराज़ थी, "बहुत रात हो गई तो क्या हुआ? कोई उसकी साइकिल ढूँढ़ने क्यों नहीं जाता? ऐसे तो कभी मैं कहीं खो जाऊँगी तो आप लोग मुझे भी ढूँढ़ने नहीं जाओगे?" मम्मी-पापा ने उसे समझाने की मुश्किल से दो कोशिशें और कीं। और मान लिया कि वे सारी कोशिशें कर चुके हैं और करवट बदलकर सो गए। लेकिन अमिया को नींद कहाँ आ रही थी।

इधर अमिया को अपनी लाल साइकिल की याद आ रही थी और उधर लाल साइकिल को अमिया की।

चित्र : दिलीप चिंचालकर